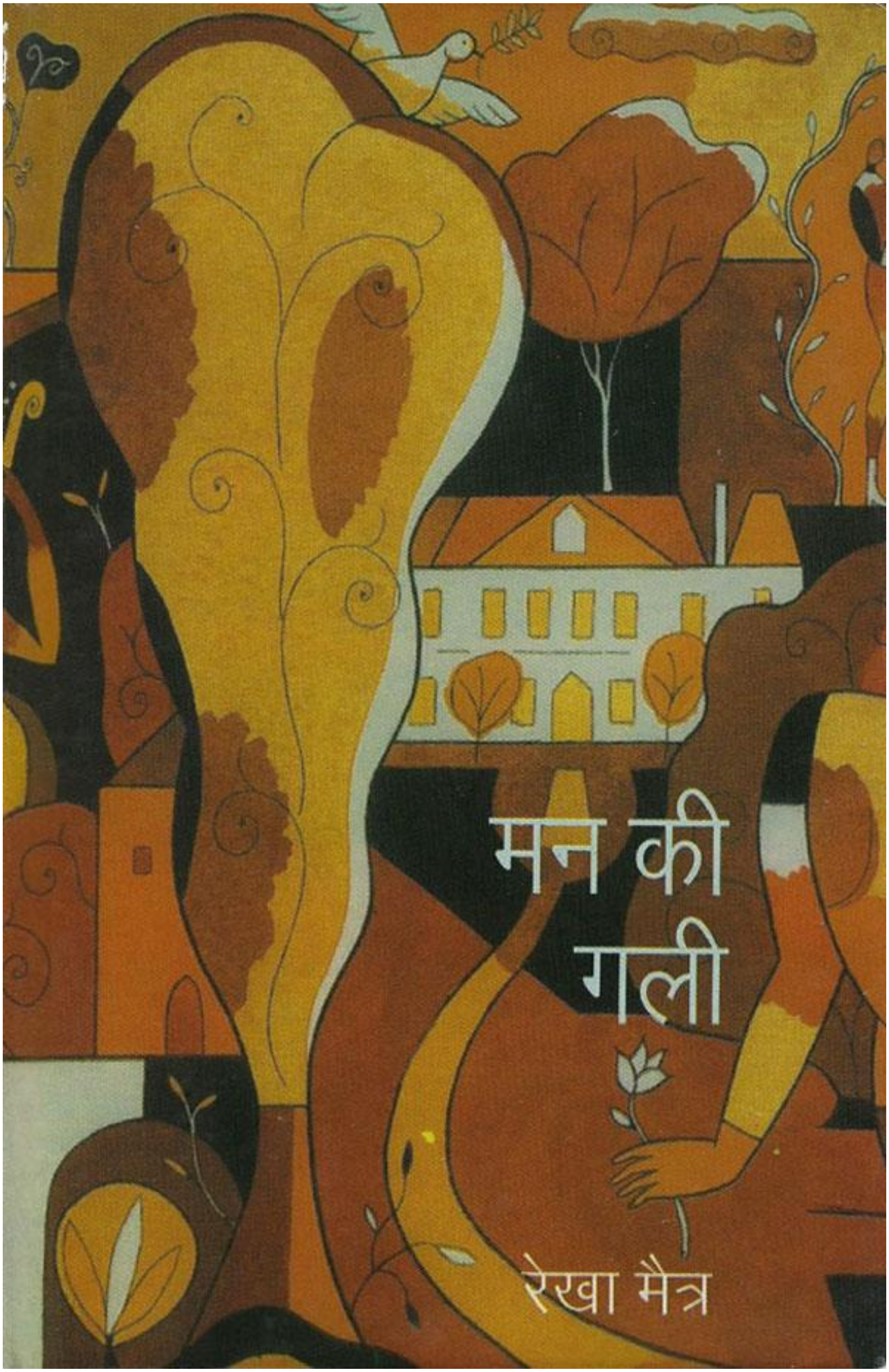
मन की
गली
रेखा मैत्र

## मन की गली

जब मन गलियारों में
सफ़र करता है,
तब आदमी बड़ा
अकेला होता है
सुरंग-सी रेलगाड़ी,
उसमें सवार एकाकी
दू-र तक फैली ख़ामोशी
पटरी-सी बिछी होती है
चलती रेलगाड़ी की तरह
घटनाएँ तब आती-जाती हैं
अपनी ही बातें,
अपने से दूर जाती हुईं;
अपनी ही बातें,
अपने तक आती हुईं;
बड़ी साफ़ दीख पड़ती हैं!
आदमी रह जाता है
घटनाओं का तटस्थ साक्षी!
केवल तटस्थ साक्षी...!

## नीला चाँद

कल रात,
चाँद मेरे पास
खिड़की के रास्ते आया
झकझोर कर उसने
मुझे कच्ची नींद से जगाया
बोला,
चलो,
तुम्हें अपना अभिनव
नील वर्ण दिखाऊँगा
इसके बाद,
फिर मैं
बहुत दिनों में
आऊँगा।
अब मैं
बूढ़ा चाँद
नहीं रहा
इस बार
दुगनी कलाएँ लेकर
आया हूँ
इसी से
तुम्हारे लिए
दोहरी चाँदनी

लाया हूँ
"पागल तो नहीं हो तुम?"
मैंने कहा—
हर रोज
तुम्हें देखती हूँ!
नींद से इस तरह
जगाने का
कोई बेहतर
बहाना बनाना था।
चिढ़कर वह बोला,
"आसमानों पर अब भी
सच बोलने का चलन है"
यक़ीन न हो तो
पूछो इस साथी से
उसकी भी नींद खोलूँ?
असंवेदनशील हो लूँ?
नहीं, बिल्कुल नहीं
हमारे अस्फुट
संभाषण से
घबड़ा कर
तुम जाग गए
चाँद का संदेश
पा गए।
तब हमने तय किया
हम चाँद के साथ गए
उसकी नीली आभा की
चादर ओढ़े घास पर
दुबक गए
सारी रात
बतियाते रहे

फिर जब,
पलकें नींद से
मुंदने लगीं
हमारी चेतना
सोने लगी
शरारती सूरज
भागता आया
रोशनी के छींटे
हमारी उनींदी आँखों में
डाल गया।
मैंने उसे
बंद आँखों से
झिड़का
"यार। आज रविवार है"
औ-र
अब, जब तुम
आ ही गए हो तो
जाते-जाते अख़बारवाले से कहना
अलस्सुबह दरवाजे की
घंटी न टनटनाए
महरी से कहना
बर्तन न ठनठनाए
आज मुझे
पंछियों की
चक्-चक् से
जगना है
आज मुझे
पनघट की
झक्-झक् से
जगना है

आज मुझे
सुननी है
गोरी की
रतजगे की बातें!
वैसी उस रात पर
ऐसी इस भोर पर
मेरी सारी
उम्र निछावर।

# अलविदा

अक्सर देखा है-
एक छत के नीचे
कई लोगों को रहते
अपने-अपने कटघरों में
एक का दूसरे से
कोई वास्ता नहीं जैसे
फिर भी रहते हैं साथ वे
समझौते की सज़ा काटते
ऐसे संबंधों की बदबू
मेरी नाक नहीं सह पाती
इससे अच्छा तो ये होता-
सारे अपने कटघरों से
निकल-निकल कर
अलग-अलग दिशा ले लेते
फिर कभी, किसी मोड़ पर मिलते
दोस्ताना अंदाज़ में चाय पीते
अपने-अपने क़िस्से सुनाते
अन्त में अलविदा कहते
अगले सफ़र को निकल लेते

## जुड़वाँ

जिस्म से रूह
अलग मत करना
वर्ना जान निकल जाएगी
मेरी हिन्दी, मेरी उर्दू
मेरे मन की माटी पर तो
दोनों साथ-साथ उगती हैं
मेरे अपने आँगन में तो
दोनों साथ-साथ पनपी हैं
एक को अगर उखाड़ोगे
दूजी साथ उखड़ जाएगी
एक को अगर सँवारोगे
दूजी साथ सँवर जाएगी
मज़हब की तलवारों से भी
तुम इसको मत कटने देना
तन का कटना देख सके तो
मन का देख नहीं पाओगे!

## ख़ुशबू

मेरे अपने गीत!
मुझे माफ़ी दे देना
जब-जब तुमको मैंने
अपने शब्दों का चोला पहनाया
शब्द शरारती बच्चों जैसे
छूट-छूट कर भाग गए हैं
मुश्किल से जब पकड़ में आए
तब तक गीत बिला जाते हैं
वापस बात नहीं आती है,
गीतों की खाली ख़ुशबू ही
मेरे पास चली आती है
मुश्किल ये है ख़ुशबू को मैं
कैसे काग़ज़ पर आँकूँगा?
मेरे अपने गीत!
मुझे माफ़ी दे देना